ग़ज़ल गायन की मंचीय प्रस्तुति में तबला संगति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी)
दयालबाग आगरा से संगीत में पीएच.डी. उपाधि हेतु
शोध–प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थी

हरिओम माहौर

शोध निर्देशिका

डॉ. नीलू शर्मा

संगीत विभाग (तबला)

संगीत विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग आगरा-282005
2022

भूमिका-

संगीत भावाभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। संगीत को स्वर-लय-ताल में पिरोकर उसकी अदायगी की अनुभूति भावों के द्वारा ही व्यक्त की जाती है। संगीत सभी ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। संगीत का वास्तविक ज्ञान स्वर–लय–ताल तीनों के संयुक्त समावेश के क्रमिक अध्ययन से प्राप्त होता है, और साथ ही मानसिक एवं आत्मीय ज्ञान भी संगीत में निहित भावों व सौन्दर्यात्मक तत्वों द्वारा ही सम्भव है।

संगीत को मुख्यतः दो भागों में बॉटा गया है- शास्त्रीय संगीत और उपशास्त्रीय संगीत। शास्त्रीय संगीत शास्त्रानुसार संचालित होता है, उपशास्त्रीय संगीत में शास्त्र नियमों की शिथिलता होती है। सुगम संगीत भी उपशास्त्रीय संगीत का ही एक भाग है, जिसे सरल संगीत भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत शास्त्र नियमों की बाध्यता नही होती है। यह पूर्णतः स्वरों एवं भावों पर निर्भर होता है। **सुगम संगीत वह है, जिसे सुनकर संगीत कला से अनभिज्ञ श्रोता भी आनन्दमग्न हो जाए।** इसी सन्दर्भ में **संगीत विशारद** में कहा गया है कि– **शास्त्रीय संगीत मस्तिष्क है तो सरल संगीत हृदय है।** सुगम संगीत के अन्तगर्त गीत, ग़ज़ल, भजन, कव्वाली, लोकगीत इत्यादि गायन शैलियां आती है। जिसमें सर्वाधिक प्रभावित करने वाली शैली ग़ज़ल गायन शैली है। ग़ज़ल गायकी पूर्ण रुप से स्वर, शब्द एवं भाव पर निर्भर है। यह एक ऐसी शैली है जिसे जनसाधारण से लेकर संगीत विद्वानों तक मनोनुकूल पाया जाता है। ग़ज़ल का भारतीय साहित्य एवं संगीत क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है।

ग़ज़ल का जन्म ईरान में हुआ जहॉ इसे फारसी भाषा में लिखा जाता था। ग़ज़ल शब्द की व्युत्पत्ति अरबी भाषा के **गजाला** शब्द से हुई है, जिसका अर्थ होता है - **मृग या हिरन अर्थात् मृग नयनों के समान सुन्दर आँखों वाले के सन्दर्भ में लिखी गई कविताऐं ग़ज़ल कहलाती है।** ग़ज़ल लिखने की सर्वप्रथम शुरुआत अरबी साहित्य से हुई, कालान्तर में यह फारसी, उर्दू व हिन्दी साहित्य में भी काफी लोकप्रिय हुई। ग़ज़ल एक ऐसी काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो संगीतबद्ध रूप में हमारे अर्न्तमन को सुकून देती है। **डॉ. ख्वाजा अहमद फारूकी बताते है कि- ग़ज़ल का अर्थ उस कराह से भी है, जो गजाला (मृग) को तीर चुभने के बाद बेकसी के आलम में निकलती है।** ग़ज़ल का मिज़ाज सुन्दरता, वेदना, विरहा, प्रेम आदि भावों से परिपूर्ण होता है। ग़ज़ल का हिन्दी

भाषा के साथ-साथ हिन्दी काव्य में भी विकास हुआ और हिन्दी के प्रथम ग़ज़लकार **प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो** को माना जाता है। ग़ज़ल गायन की उत्पत्ति फारस के लोक संगीत से भी मानी जाती है। ग़ज़ल गायन शैली श्रृंगार रस प्रधान गायकी है जो कम शब्दों में अधिक भावों को व्यक्त करने में सक्षम है। ग़ज़ल गायन शैली को आगे बढाने का श्रेय कई प्रसिद्ध कलाकारों को जाता है, जैसे– जगजीत सिंह, गुलाम अली, बेग़म अख़्तर, मेहदी हसन, हरिहरन, पंकज उधास, अहमद हुसैन-मोहम्मद हुसैन, तलत अजीज इत्यादि। इन कलाकारों ने लोकलुभावन ग़ज़लों से दुनियाभर में राज किया। इन्होंने ग़ज़ल गायन तथा ताल पक्ष में सफलतापूर्वक नवीन प्रयोग किये साथ ही अनेक विद्वान कलाकारों ने भी तबला संगत के माध्यम से ग़ज़ल गायन शैली को उच्चतम शिखर तक पहुंचाया तथा श्रोताओं को सौन्दर्यात्मक अनुभूति करायी है।

समस्त संगीत एवं संगीत शैलियों की सांगीतिक प्रस्तुति में ताल का एक महत्वपूर्ण स्थान है, अर्थात् ताल के द्वारा ही संगीत की कल्पना एवं प्रस्तुतिकरण दोनों सम्भव होती हैं। संगीत में तालबद्ध एवं लयबद्ध होना नितान्त आवश्यक है। ताल को संगीत का प्राण माना गया है। संगीत के तीनों अंगों गायन-वादन-नृत्य में ताल का समान महत्व है। **ताल संगीत की आत्मा है, एवं यह सर्वविदित सत्य है कि, ताल के सुन्दर एवं सुचारू रूप से प्रस्तुतिकरण हेतु महत्वपूर्ण साधन ताल वाद्य हैं।** ताल वाद्यों में तबला एकमात्र ऐसा अवनद्य वाद्य है, जिसे संगत एवं एकल वादन दोनों रूपों में प्रयोग किया जाता है। तबला आज संगीत की सभी विद्याओं की संगति के लिए एक महत्वपूर्ण वाद्य बन गया है, अर्थात् ताल का स्वरूप ताल वाद्यों की संगत के माध्यम से ही दृष्टिगत होता है।

संगत का अर्थ मात्र किसी के साथ चलना या जाना ही नही है, वरन् साथ मिलकर, जुड़कर, समन्वय बनाकर चलना या जाना होता है। संगत कहने मात्र से ही एक भाव और मन में स्वत: ही उभर आता है-किसी न किसी के साथ। तबला संगत का प्रमुख वाद्य है। वर्तमान समय में संगीत की समस्त विद्याओं को प्रभावशाली, मनमोहक व लयबद्ध बनाने के लिए तबला संगति का प्रयोग अधिक महत्वपूर्ण है। तबला संगति का प्रयोग संगीत की किसी भी विद्या के साथ करने पर कलात्मक एवं सौन्दर्यात्मक तत्वों की अनुभूति होती

है। ग़ज़ल गायन शैली में तबला संगति का प्रयोग महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसी विद्या है, जिसके साथ तबला संगति का एक अलग अन्दाज, शैली एवं भाषा है। जिसका प्रयोग प्रत्येक कलाकार अपनी स्वतंत्र सृजनात्मक एवं कलात्मक सोच के साथ करता है।

संगीत एक मंचीय प्रदर्शन की कला है। संगीत की सभी विद्याओं में मंचीय प्रस्तुति अत्यधिक आवश्यक होती है, इसी प्रकार ग़ज़ल गायन शैली में भी मंचीय प्रस्तुति महत्वपूर्ण होती है। ग़ज़ल गायक अपनी मंचीय प्रस्तुति में स्वर-ताल का सामांजस्य बिठाते हुए श्रोताओं के सम्मुख भावों की अभिव्यक्ति करते हुए एक संवाद स्थापित करता है, जिससे श्रोताओं को अधिक आनन्द की अनुभूति प्राप्त होती है। ग़ज़ल गायकों ने ग़ज़ल के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए विभिन्न प्रकार की ग़ज़लें गायी है तथा विविध प्रकार के ठेकों व नवीन प्रयोगों से ग़ज़ल गायकी को एक अलग मुक़ाम पर पहुँचाया है।

आज के बदलते परिवेश में ग़ज़ल गायन शैली में भी अनेकों-अनेक परिवर्तन हो रहे हैं, लोगों की विचारधाराऐं बदल रही हैं, और नित नये प्रयोग किए जा रहे हैं, एवं इन सभी प्रयोगों के माध्यम से ही ग़ज़ल गायन शैली आज विश्व पटल पर नया कीर्तिमान हासिल कर रही है। संगीत की मंचीय प्रस्तुतियों में सांगीतिक रसानुभूति व आनन्द स्वरों-भावों के साथ–साथ कलात्मक तबला संगति से भी प्राप्त होता है। ग़ज़ल गायन शैली में तबला संगति का प्रयोग नियम व शास्त्र से परे होकर अत्यन्त कलात्मक, रचनात्मक, सौन्दर्यात्मक, सृजनात्मक शैली के अनुरूप विवेकपूर्ण ढंग से किया जाता है, जिस कारण ग़ज़ल गायन शैली में अप्रतिम रसानुभूति प्राप्त होती है।

ग़ज़ल गायन शैली की संगति में तबला वादक की सूझबूझ, गायकी के साथ बुद्धिमत्ता तथा अनुपातपूर्ण वादन एक विशिष्ट छाप छोड़ता है। अत: इन्हीं सभी विशिष्टताओं एवं पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी के अन्तर्मन में यह विचार प्रकट हुआ कि, ग़ज़ल गायन के साथ तबला संगति का प्रयोग किन-किन कलाकौशल, सूझबूझ एवं रचनाधर्मिता के साथ किया जा सकता है, इसकी विशिष्टताओं एवं विभिन्न आयामों का अध्ययन

किया जाए। इस विषय के अध्ययन हेतु शोधार्थी ने सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया, जो इस प्रकार है-

पुस्तकें-

1. तबला संगत एवं कलाकार- (लेखक-सरल डॉ.भीमसेन)

2. सूफियाना क़लाम-भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में- (लेखक-प्रो.राजकुमारी)

3. फिल्म संगीत निर्देशक रोशन व उनके समकालीन संगीतकार- (लेखक-जौहरी सीमा)

4. भारतीय तालों में ठेके के विभिन्न स्वरूप- (लेखक-चिश्ती डॉ.आर.एस.)

5. ताल मार्तण्ड- (लेखक-वशिष्ठ सत्यनारायण)

6. तबला एक समग्र वाद्य-स्वतंत्र वादन एवं संगति- (लेखक-चौधरी डॉ.सीमा)

7. तबला वादन शिक्षा के बदलते आयाम- (लेखक-पाण्डे डॉ.कृतानन्द)

8. ताल वाद्य शास्त्र एक विवेचन- (लेखक-मराठे डॉ.मनोहर भालचन्द्र राव)

9. संगीत में ताल की एतिहासिकता, महत्व एवं आवश्यकता- (लेखक-श्रीवास्तव डॉ. कविता)

10. उत्तर भारतीय तालों में छन्द, रस और सौन्दर्यतत्व- (लेखक-श्रीवास्तव डॉ.शुभ्रा)

11. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन- (लेखक-सेन डॉ.अरूण कुमार)

12. संगीत विशारद- (लेखक-वसंत)

13. भारतीय संगीत का इतिहास- (लेखक-जोशी उमेश)

14. तबला वादन में सौंन्दर्य- (लेखक-मईणकर पं.सुधीर)

15. मंच प्रदर्शन में कलाकार एवं श्रोता- (लेखक-तिवारी हरीश)

16. तबला वादन कला की तकनीकी एवं सौन्दर्य पक्ष- (लेखक-श्रीवास्तव डॉ.सुनीता)

17. फिल्म संगीत बदलता स्वरूप- (लेखक-शर्मा नवल किशोर)

शोध प्रबन्ध-

1. तबला संगत के आदर्श लेखक- (लेखक-मिश्र पण्डित ईश्वर लाल,अगस्त 2013)

2. तबला वादन की शिक्षण पद्धति (एक विवेचनात्मक अध्ययन)- (लेखक-शर्मा डॉ. नीलू 1996-दयालबाग विश्वविद्यालय, आगरा)

3. उ. मेहदी हसन ग़ज़ल गायकी के मसीहा- (लेखक-विश्नात दीपेश कुमार-कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान)

4. हिन्दी ग़ज़ल परम्परा में ग़ज़लकार ज़हीर कुरैशी का स्थान (एक विवेचनात्मक अध्ययन)- (लेखक-मेघवाल रामावतार 2017-कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान)

5. कथक नृत्य के साथ तबला संगति- (लेखक-कर्ण नागेश्वर लाल 1996-इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खेरागढ)

6. उत्तर भारतीय शास्त्रीय, उपशास्त्रीय व सुगम संगीत की गायन शैलियों की भावात्मक एवं कलात्मक सौंदर्यवृद्वि में सहायक वाद्यों के प्रयोग का अध्ययन एवं तुलनात्मक विवेचन- (लेखक-राधारानी 2006 दयालबाग विश्वविद्यालय, आगरा)

7. शास्त्रीय संगीत व उर्दू शायरी विशेषकर ग़ज़ल के सन्दर्भ में- (लेखक-सहगल डॉ.सुधा 1991-दयालबाग विश्वविद्यालय, आगरा)

पत्र–पत्रिकाऐं-

1. सुगम संगीत की शैलियों में तबला वादन की भूमिका– (लेखक-सिंह मनदीप 2018–पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला)

2. ग़ज़ल गायन शैली, सांगीतिक विश्लेषण- (लेखक-शाह डॉ.रेखा)

3. मध्यकालीन फ़ारसी एवं उर्दू के संगीत ग्रन्थ- (लेखक-अहमद परवीन प्रो.नज़मा- पत्रिका संगीत–2021)

4. ग़ज़ल का सफर और असर- (लेखक-खॉन नाज-पत्रिका संगीत अक्टूबर–2019)

5. मुहब्बत करने वाले कम न होंगे- (लेखक-धमोरा उमेश सर्राफ-पत्रिका संगीत जून–2019)

6. बनारसी महफिल- (लेखक-दास रायकृष्ण- अंक गणिका संगीत जनवरी–2019)

7. उनकी बेमिसाली उनकी लाजबाबी बेग़म अख़्तर- (लेखक-द्विवेदी प्रमोद- अंक गणिका संगीत जनवरी–2019)

8. हिन्दी ग़ज़ल का स्वरूप–विश्लेषण- (लेखक-परिहार भुवनेश कुमार,खॉन डॉ.शमॉ– अप्रैल 2019)

9. हिन्दी ग़ज़ल का संक्षिप्त इतिहास एवं नवछन्द हिन्दकी- (लेखक-विश्वकर्मा डॉ. माणिक)

10. फिल्म संगीत एवं ग़ज़ल गायकी- (लेखक-मोदी डॉ. प्रमिला)

11. ग़ज़ल का इतिहास- (लेखक-शुक्ल अनूप जुलाई 24, 2006)

12. ग़ज़ल का इतिहास और ग़ज़ल की भाषा- (लेखक-ख्याल सतपाल)

13. सिने संगीत में शास्त्रीय प्रयोग संगीतकार स्व. नौशाद द्वारा- (लेखक-दुबे आरती-खण्डवा)

14. उपशास्त्रीय संगीत के अन्तगर्त आने वाली विभिन्न गायन शैलियों में प्रयुक्त रागों व तालों की व्यवहारिकता- (लेखक-शर्मा चारू 2016)

उपरोक्त सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के उपरान्त यह ज्ञात होता है कि, ग़ज़ल का परिचय, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं हिन्दी-उर्दू ग़ज़ल शायरी विषयों पर कार्य हो चुका है, परन्तु ग़ज़ल गायन की मंचीय प्रस्तुतियों के साथ तबला संगति पर कोई भी कार्य नही हुआ है। अतः शोधार्थी द्वारा गहन अध्ययन करने हेतु निम्नलिखित विषय का चयन किया गया है-

विषय कथन-

"ग़ज़ल गायन की मंचीय प्रस्तुति में तबला संगति का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

विषय कथन में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या-

ग़ज़ल- फारसी या उर्दू भाषा की वह कविता जिसमें नायिका के सौंदर्य एवं उसके प्रति प्रेम का वर्णन हो। (अमरकोश भारत द्वारा) **मंचीय-**

मंच सम्बंधी, मंच का। (अमरकोश भारत द्वारा)

प्रस्तुति- प्रस्तुत होने की अवस्था या भाव, प्रस्तुत करने की क्रिया। (हिन्दवी शब्दकोश द्वारा)

तबला- चमड़े से मढ़ा एक बाजा, ताल देने का एक प्रसिद्ध वाद्ययंत्र। (रफतार शब्दकोश द्वारा)

संगति- संग रहने की क्रिया । (अमरकोश भारत द्वारा)

विश्लेषणात्मक- विचार या निश्चय या जो विश्लेषण वाली प्रक्रिया के अनुसार हो। (रफतार शब्दकोश द्वार)

अध्ययन की आवश्यकता-

संगीत की उपशास्त्रीय शैली में ग़ज़ल गायन सुपरिचित शैली है अर्थात् वर्तमान समय में यह अत्यन्त लोकप्रिय है। ग़ज़ल गायन प्रस्तुतिकरण के व्यवहारिक पक्ष के अन्तगर्त तबला संगति महत्वपूर्ण है। तबला संगति वह माध्यम है जिसके प्रयोग से ग़ज़ल प्रस्तुति में सौंन्दर्यपरक तत्वों की अनुभूति होती है, जो श्रोताओं को आल्हादित कर निहित भावों की अभिव्यक्ति में सहायक होती है। ग़ज़ल गायन के इस पक्ष को उजागर करने हेतु कार्य आवश्यक है। अतः इस अध्ययन से तबला संगति के विविध पक्षों की जानकारी प्राप्त होगी, जो कि संगीत जगत के लिए लाभप्रद होगी।

उद्देश्य-

1. ग़ज़ल गायन शैली के सैंद्धान्तिक व क्रियात्मक पक्ष का अध्ययन करना।

2. तबला स्वतंत्र वादन व तबला संगति का अध्ययन करना।

3. मंच प्रदर्शन के विकास, महत्व एवं विविध आयामों का अध्ययन करना।

4. मंच प्रदर्शन की दृष्टि से तबला संगति का अध्ययन करना।

5. चयनित ग़ज़ल गायकों का परिचय व उनकी गेय ग़ज़लों का अध्ययन करना।

6. ग़ज़लों में निहित सौंन्दर्यात्मक तत्वों का अध्ययन करना।

7. ग़ज़ल गायन की मंचीय प्रस्तुति में तबला संगति का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना। **8**. ग़ज़ल गायन के वर्तमान समय में आये परिवर्तनों व नवीन प्रयोगों का अध्ययन करना। **अध्ययन का परिसीमांकन-**

प्रस्तावित शोध कार्य ग़ज़ल गायन शैली में तबला संगति का अध्ययन करने हेतु पाँच चयनित ग़ज़ल गायकों द्वारा गेय 5-5 ग़ज़लों तक सीमित रहेगा। साथ ही मंचीय प्रस्तुति की उपलब्ध ध्वनांकित सामग्री पर आधारित होगा। चयनित पाँच ग़ज़ल गायकों के नाम इस प्रकार हैं-

1. उस्ताद मेहदी हसन

2. उस्ताद गुलाम अली

3. अहमद हुसैन-मोहम्मद हुसैन

4. जगजीत सिंह

5. हरिहरन

अध्ययन की कार्यविधि-

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु शोध छात्र द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा तथा साक्षात्कार विधि द्वारा विभिन्न विद्वानों एवं कलाकारों की सहायता से कार्य पूर्ण किया जाएगा। इसमें वर्णात्मक प्रश्नावली, विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग कर विषय में आए तत्वों को और अधिक सत्यापित किया जायेगा।

अध्ययन के स्त्रोत-

प्रस्तावित शोध को पूर्ण करने हेतु पुस्तकालयों, पुस्तकों, संगीत ग्रन्थों, पत्र-पत्रिकाओं, संगीत संस्थानों एवं अकादमियों से जानकारी एकत्र की जाएगी और आकाशवाणी केन्द्रों से ध्वनांकित सामग्री एकत्रित की जाएगी। कैसेट, सी.डी., डी.वी.डी. एवं इण्टरनेट माध्यम से दृश्य-श्रव्य सामग्री प्राप्त की जाऐगी, साथ ही कलाकारों, संगीत आचार्यो व संगीत विद्वानों से साक्षात्कार द्वारा भी जानकारी एकत्रित की जाऐगी।

अध्ययन की रूपरेखा-

भूमिका एवं सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण।

प्रथम अध्याय- ग़ज़ल गायन शैली का परिचयात्मक अध्ययन

- परिचय

- सैद्धान्तिक पक्ष
- क्रियात्मक पक्ष

द्वितीय अध्याय- तबला वादन: एक परिचयात्मक अध्ययन

- परिचय
- स्वतंत्र तबला-वादन
- तबला-संगति

तृतीय अध्याय- संगीत एवं मंच प्रदर्शन

- मंच प्रदर्शन का विकास व महत्व
- मंच प्रदर्शन के विविध आयाम
- मंच प्रदर्शन की दृष्टि से तबला संगति

चतुर्थ अध्याय- चयनित ग़ज़ल गायकों का परिचय एवं उनके द्वारा गेय ग़ज़लें

- गायकों का संक्षिप्त परिचय
- गेय ग़ज़लों का संकलन

पंचम अध्याय- चयनित गेय ग़ज़लों में सौन्दर्यात्मक तत्वों का अध्ययन

- ग़ज़लों में प्रयुक्त छन्द
- ग़ज़लों में रस प्रयोग
- गलों में प्रयुक्त ताल व ठेके
- ग़ज़लों की प्रकृति व चलन

षष्ठम अध्याय- ग़ज़ल गायन की मंचीय प्रस्तुति में तबला संगति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

- प्रयुक्त तालें
- ठेकों के प्रकार एवं भराव

- प्रयुक्त लग्गी-लडियॉ

- प्रयुक्त तिहाईयॉ

सप्तम अध्याय- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग़ज़ल गायन में दृष्टिगत परिर्वतनों का अध्ययन

- विभिन्न प्रकार के वाद्यों का प्रयोग

- इलैक्ट्रॉनिक वाद्यों का प्रयोग

- पाश्चात्य प्रभाव

- लय व गति के आधार पर

- सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से परिवर्तन

- ठेकों के नवीन प्रयोग

- अन्य

उपसंहार- **नोट-**

उपरोक्त अध्यायों के उपबिन्दुओं में उपलब्धता के आधार पर परिवर्तन सम्भाव है।

अध्ययन का महत्व-

प्रस्तावित शोध का महत्व इसके अन्तगर्त समायोजित होने वाले रचनात्मक, क्रियात्मक एवं सृजनात्मक तत्वों पर निर्भर होगा। ग़ज़ल गायन शैली के साथ तबला संगति एक विवेकपूर्ण व सूझबूझ युक्त कार्य है, जिस पर क्रियात्मक कार्य के लिखित स्वरूप की उपलब्धता नही है। अत: प्रस्तावित शोध तबला संगति के विभिन्न रूपों व आयामों को उजागर करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण व सार्थक होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

पुस्तकें-

1. तबला संगत एवं कलाकार- लेखक- सरल डॉ. भीमसेन (पृ.स.37)

2. तबला एक समग्र वाद्य- लेखक- चौधरी डॉ. सीमा (पृ.स.203)

3. संगीत विशारद- लेखक- वसंत (पृ.स.658)

4. तबला वादन शिक्षा के बदलते आयाम- (लेखक-पाण्डे डॉ.कृतानन्द)

5. तबला वादन में सौंन्दर्य- (लेखक-मईणकर पं.सुधीर)

शोध-प्रबन्ध-

1. तबला वादन की शिक्षण पद्धति (एक विवेचनात्मक अध्ययन)- (लेखक-शर्मा डॉ. नीलू 1996-दयालबाग विश्वविद्यालय, आगरा)

2. शास्त्रीय संगीत व उर्दू शायरी विशेषकर ग़ज़ल के सन्दर्भ में- (लेखक-सहगल डॉ.सुधा 1991-दयालबाग विश्वविद्यालय, आगरा)

3. हिन्दी ग़ज़ल परम्परा में ग़ज़लकार ज़हीर कुरैशी का स्थान। (एक विवेचनात्मक अध्ययन) लेखक- मेघवाल रामावतार 2017 (कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान)

4. उ. मेहदी हसन ग़ज़ल गायकी के मसीहा- (लेखक-विश्नात दीपेश कुमार-कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान)

पत्र-पत्रिकाऐं-

1. पत्रिका हिन्दी विवेक (मुम्बई)- फिल्म संगीत एवं ग़ज़ल गायकी- लेखक- मोदी डॉ. प्रमिला

   ग़ज़ल गायन शैली, सांगीतिक विश्लेषण- (लेखक-शाह डॉ.रेखा)

2. ग़ज़ल का सफर और असर- (लेखक-खॉन नाज-पत्रिका संगीत अक्टूबर–2019)

3. सुगम संगीत की शैलियों में तबला वादन की भूमिका– (लेखक-सिंह मनदीप 2018–पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला)

4. हिन्दी ग़ज़ल का स्वरूप-विश्लेषण- लेखक- परिहार भुवनेश कुमार, खॉन डॉ. शमां

   Journal of Advance and Scholarly Researches in Allied Education Vol.16, Issue No.5 April-201 [ISSN 2230-7540]

सम्भावित प्रश्नावली-

- ❖ आपके अनुसार ग़ज़ल गायन शैली किस प्रकार की गायकी है?
- ❖ आपकी दृष्टि में ग़ज़ल गायन शैली का सैद्धान्तिक पक्ष क्या हैं?
- ❖ आपके विचारों से ग़ज़ल गायन का क्रियात्मक पक्ष क्या हैं?
- ❖ संगीत में मंच प्रदर्शन का क्या महत्व है?
- ❖ मंच प्रदर्शन की दृष्टि से तबला संगति कैसी होनी चाहिए?
- ❖ आपकी सर्वाधिक लोकप्रिय ग़ज़लें कौन-कौन सी हैं एवं उनकी क्या विशेषताऐं हैं?
- ❖ छन्दों एवं रसों के आधार पर ग़ज़लें कैसी होती हैं एवं इनका ग़ज़ल गायन शैली में क्या उपयोगिता है?
- ❖ ताल के ठेकों का ग़ज़ल गायन में क्या महत्व है?
- ❖ ग़ज़ल गायन शैली में कौन-कौन सी तालें प्रमुख रूप से प्रयोग की जाती हैं?
- ❖ ग़ज़ल गायन की संगत में तालों के ठेकों में परिवर्तन किस प्रकार आवश्यक है?
- ❖ ग़ज़लों की तबला संगति में लग्गी-लडियॉ, तिहाईयॉ आदि का प्रयोग क्यों आवश्यक है?
- ❖ वर्तमान समय में ग़ज़ल गायन की तबला संगति में क्या-क्या परिवर्तन हो रहे हैं?
- ❖ ग़ज़ल गायन के साथ तबला संगति करने वाले कलाकारों के बारे में आपके क्या विचार हैं?
- ❖ ग़ज़ल गायन शैली से आप किस प्रकार प्रभावित है?
- ❖ ग़ज़ल गायन शैली में कौन-कौन से वाद्यों का प्रयोग किया जा रहा है?
- ❖ ग़ज़ल गायन शैली में पाश्चात्य प्रभाव किस प्रकार हो रहा है?
- ❖ सामाजिक व मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ग़ज़ल गायन शैली में क्या-क्या परिवर्तन हो रहे हैं?
- ❖ प्रकृति व चलन के आधार पर ग़जल गायन व तबला संगति में क्या परिवर्तन हो रहे हैं?

नोट कार्य के आधार पर प्रश्नावली में परिवर्तन सम्भव है।